



प्रेस विज्ञप्ति

आईआईटी भुवनेश्वर ने ओडिशा के इतिहास और विरासत को श्रद्धांजलि देते हुए उत्कल दिवस मनाया

भुवनेश्वर, 2 अप्रैल 2025: भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) भुवनेश्वर ने उत्कल दिवस को भव्य तरीके से मनाया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रोफेसर बसंत कुमार पांडा, परियोजना निदेशक, शास्त्रीय ओडिया अध्ययन उत्कृष्टता केंद्र, केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल), शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार उपस्थित थे। इस अवसर पर आईआईटी भुवनेश्वर के निदेशक प्रोफेसर श्रीपाद कर्माकर और संस्थान के रजिस्ट्रार श्री बामदेव आचार्य भी उपस्थित थे।

प्रो. करमलकर ने अपना पूरा भाषण ओडिया में दिया, भले ही उनकी मातृभाषा ओडिया न हो। उन्होंने ओडिशा में अपने दो साल से ज़्यादा के प्रवास के दौरान के अपने अनुभव बताए। उन्होंने कहा: "आईआईटी भुवनेश्वर भविष्य के नेताओं को पोषित करने की दिशा में प्रतिबद्ध है और लगातार काम कर रहा है जो ज्ञान और ईमानदारी के साथ राष्ट्र की प्रगति में योगदान देंगे। संस्थान महत्वाकांक्षी 100-क्यूब स्टार्ट-अप पहल की दिशा में लगन से काम कर रहा है, जिसका लक्ष्य 2036 में ओडिशा की 100वीं वर्षगांठ तक 100 करोड़ रुपये के मूल्यांकन के साथ 100 स्टार्ट-अप बनाना है।"

इस अवसर पर बोलते हुए रजिस्ट्रार श्री बामदेव आचार्य ने ओडिशा की समृद्ध विरासत और धरोहर को संजोया। उन्होंने ओडिशा की राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए भाषा के आधार पर ओडिशा को एक स्वतंत्र राज्य के रूप में स्थापित करने में महान नेताओं की भूमिका को याद किया।

मुख्य अतिथि प्रो. पांडा ने अपने संबोधन में कहा, "राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार देश की शिक्षा प्रणाली में मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा शुरू की जा रही है। बहुभाषावाद विशेष रूप से भाषा शिक्षा और सामान्य रूप से शिक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है।" उन्होंने समाज के विकास में मातृभाषा के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने ओडिया भाषा के ऐतिहासिक विकास पर प्रकाश डाला। उन्होंने भाषा के आधार पर राज्य का दर्जा हासिल करने के लिए ओडिशा के संघर्ष के बारे में भी विस्तार से बात की।

कार्यक्रम की शुरुआत में एक भारत श्रेष्ठ भारत (ईबीएसबी) की समन्वयक डॉ. रेम्या नीलांचेरी ने स्वागत भाषण दिया। कार्यक्रम का समन्वय आईआईटी भुवनेश्वर की ईबीएसबी टीम ने किया।

संस्थान के सदस्यों द्वारा प्रस्तुत एक जीवंत सांस्कृतिक कार्यक्रम ने इस अवसर की भावना को दर्शाया और दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

इस अवसर को चिह्नित करने के लिए, संस्थान के केंद्रीय पुस्तकालय ने संस्थान के सदस्यों के लिए ओडिशा की आकर्षक भूमि और इसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का जश्न मनाते हुए एक विशेष पुस्तक प्रदर्शनी शुरू की है। पुस्तकों का यह विशेष संग्रह ओडिशा की विरासत के विभिन्न पहलुओं, जैसे कि इसका इतिहास, कला, संस्कृति, भाषा और साहित्य को दर्शाता है, जिसे 1 अप्रैल से 3 अप्रैल 2025 तक प्रदर्शित किया जाएगा।

इससे पहले, उत्कल दिवस समारोह के एक हिस्से के रूप में, आईआईटी भुवनेश्वर के उन्नत भारत अभियान (यूबीए) ने 29 मार्च 2025 को सामुदायिक केंद्र में एक जीवंत प्रदर्शनी और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें ओडिशा की समृद्ध विरासत, कला और परंपराओं पर प्रकाश डाला गया। इस कार्यक्रम में पारंपरिक संगीत, हस्तशिल्प, प्रामाणिक ओडिया व्यंजन और कलात्मक प्रदर्शन शामिल थे, जिसमें पाँच गोद लिए गए समुदायों के गणमान्य व्यक्ति, संकाय, छात्र और ग्रामीण शामिल हुए। निदेशक, प्रो. श्रीपद कर्मलकर, श्रीमती श्रुति कर्मलकर और रजिस्ट्रार, श्री बामदेव आचार्य ने इस अवसर पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। डॉ. सीमा बहिनीपति (समन्वयक, यूबीए), डॉ. ताराकांत नायक (सह-समन्वयक, यूबीए), और डॉ. राज कुमार सिंह (संकाय थीम लीडर, कृषि और पर्यावरण टीम) ने कार्यक्रम का समन्वय किया। इस अवसर का मुख्य आकर्षण प्रदर्शनी-सह-बिक्री थी, जिसमें 20 स्टॉल पर पट्टचित्र पेंटिंग, सिल्वर फिलिग्री ज्वेलरी और पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों जैसे विरासत शिल्प प्रदर्शित किए गए थे। पारंपरिक ओडिया व्यंजनों और टिकाऊ वस्तुओं ने अनुभव को और समृद्ध किया, जिससे कारीगरों और उपस्थित लोगों के बीच गहरा जुड़ाव बढ़ा। इस उत्सव ने ओडिशा की पहचान और शिल्प कौशल का सफलतापूर्वक सम्मान किया, जिससे यह एक यादगार और सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण अवसर बन गया।
